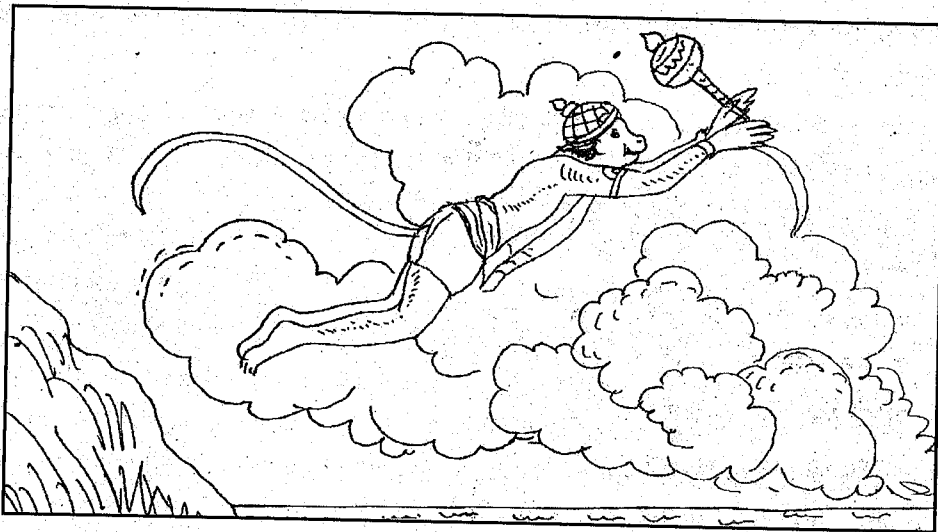


लंका में हनुमान का प्रवेश

महेन्द्र पर्वत पर खड़े होकर हनुमान ने पहले सामने की ओर देखा। अनंत सागर लहरा रहा था, ऊपर देखा तो अनंत आकाश था। पवन देवता का स्मरण करके उन्होंने अपनी लम्बी भुजाएं आगे फैलाकर छलांग ली और पवन की गति से लंका की ओर उड़ चले। हवा को चीरते हुए वे गरजते हुए चले जाते थे। मैनाक पर्वत ने उनको विश्राम देना चाहा, परंतु वे रुके नहीं।



सिंधु तीर एक भूधर सुन्दर, कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।

कुछ ही दूर गए होंगे कि नागों की माता सुरसा उनके बुद्धिबल की परीक्षा लेने मुँह फाड़कर उनकी ओर दौड़ी। हनुमान ने बहुत विनय की, पर वह न मानी और अपना मुँह बढ़ाने लगी। हनुमान भी अपना शरीर बढ़ाते चले गए। जब उनका मुँह बहुत चौड़ा हो गया, तब हनुमान अपना शरीर छोटा करके उसके मुँह में घुसकर तुरंत निकल आए और बोले- “माता! अब तो मैं तुम्हारे मुँह में घुसकर बाहर आ गया हूँ। अब जाने की अनुमति दें।” सुरसा की परीक्षा में हनुमान खरे उतरे। उसने हनुमान को आशीर्वाद देकर कहा कि तुम राम का काम अवश्य कर लाओगे।

कुछ और आगे चलने पर उन्हें सिंहिका नाम की राक्षसी का सामना करना पड़ा। उसने जल में हनुमान की परछाई पकड़ ली। इससे उनकी गति रुक गई और वे खिंचकर सिंहिका के पास जा पहुंचे। हनुमान ने अपने नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला। वे फिर उड़े और समुद्र पार कर लंका जा पहुंचे।

छोटा रूप बनाकर हनुमान एक पर्वत की चोटी पर चढ़ गए। वहाँ से सारी लंका दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि लंका के चारों ओर बड़ा मजबूत परकोटा है। परकोटे के चारों ओर चौड़ी खाई है और तरह-तरह के हथियार लिए सैनिक पहरा दे रहे हैं। उन्होंने यह भी देखा कि दुर्ग पर सैकड़ों शतध्वनियां

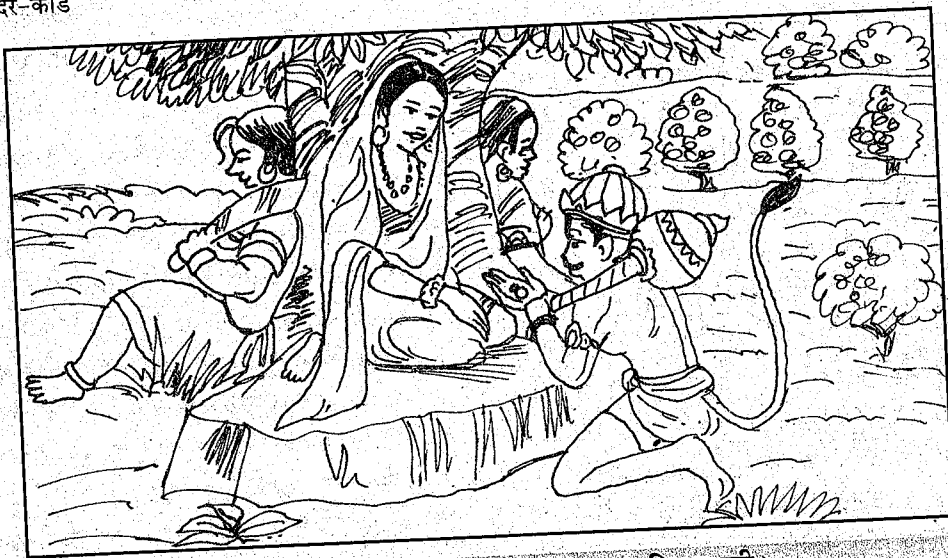
रखी हैं। सोने की लंका जगमगा रही है। नगर की शोभा और सुरक्षा देखकर हनुमान चकित हो गए। उन्होंने रात के अंधेरे में लंका में प्रवेश करना उचित समझा।

विड़ाल का-सा छोटा रूप बनाकर हनुमान लुकते-छिपते लंका में घुस गए। उन्होंने देखा लंका में एक उत्तम भवन है। चांदनी रात में वे एक अटारी से दूसरी अटारी पर आसानी से कूदने लगे। सीता उनको कहीं दिखाई नहीं दी। तब वे रावण के महल में घुस गए। उन्होंने देखा कि रावण एक सजे हुए पलंग पर सो रहा है। आस-पास अनेक सुन्दरियां सो रही हैं। इधर-उधर मंदिरा की प्यालियां पड़ी हैं। हनुमान ने बड़ी सावधानी से रावण का अन्तःपुर छान डाला, परंतु सीता उनको कहीं न मिली। मंदोदरी को देखकर उनको सीता का भ्रम भी हुआ, परन्तु उन्होंने शीघ्र ही समझ लिया कि रावण के महल में सीता इस प्रकार निश्चित होकर नहीं सो सकती। उन्होंने एक-एक गली, एक-एक घर देख लिया, परंतु सीता कहीं न मिली। रावण के पुष्पक विमान को देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बड़ा अद्भुत था। उसके पंखों में मणियां जड़ी हुई थीं।

अन्तःपुर से लगी हुई रावण की अशोक वाटिका थी। एक परकोटे के ऊपर से हनुमान ने उसे देख लिया और पहरेदारों की आंख बचाकर उसमें घुस गए। अशोक वाटिका में तरह-तरह के सुन्दर वृक्ष थे और बीच में एक ऊँचा भवन था। अशोक के पेड़ पर चढ़कर हनुमान उसे देखने लगे। उन्हें तरह-तरह की मुँहवाली अनेक राक्षसियां दिखाई दीं। फिर उन्होंने देखा कि उनके बीच में एक उदास स्त्री बैठी आंसू बहा रही है। उनको लगा कि हो न हो यही सीता जी हैं। उन्होंने मन ही मन में उन्हें प्रणाम किया और वे सोचने लगे कि किस प्रकार माता से बात हो। तरह-तरह की बातें सोचते वे पत्तों में छिपे बैठे रहे।

अब रात का अंतिम पहर आ गया। नगरी में वेद पाठ होने लगे। रावण भी जागा और अपनी रानियों और दासियों को लेकर अशोक वाटिका में आ पहुंचा। हनुमान डाली से चिपक गए जिससे किसी की निगाह उन पर न पड़े। रावण को देखकर सीता थर-थर कांपने लगी। रावण ने सीता को अनेक प्रकार के भय व लोभ दिखाए। परंतु सीता ने रावण का तिरस्कार ही किया। सीता ने कहा “यदि तुम मुझे स्वामी के पास पहुंचा कर क्षमा नहीं मांगोगे तो वे तुम्हारा सर्वनाश कर डालेंगे। सोने की लंका मिट्टी में मिल जाएगी।” क्रोध से आंखें लाल कर रावण बोला- “मैंने सोचने के लिए एक साल का समय दिया था। साल पूरा होने के दो महीने बचे हैं। इस बीच यदि तुम मेरी बात नहीं मान लेती तो मैं अपनी चंद्रहास तलवार से तुम्हारा गला काटकर फेंक दूँगा।” इतना कहकर रावण चला गया।

रावण के चले जाने पर त्रिजटा नाम की एक बूढ़ी राक्षसी ने दूसरी राक्षसियों से कहा, “पिछली रात मैंने एक सपना देखा है। सारी लंका समुद्र में डूब गई। विभीषण को छोड़कर सब दक्षिण दिशा को चले गए हैं। यह सपना अच्छा नहीं है। मेरी राय में सीता जी की सेवा करने में ही भलाई है।” पेड़ पर बैठे-बैठ हनुमान सब कुछ देख सुन रहे थे। सीता का दुःख देखकर वे दुःखी भी थे। उनको यह भी चिन्ता थी कि यदि सीता के सामने आकर संस्कृत में बोल उठे तो सीता कहीं मायावी रावण ही न समझ ले। यह विचार कर उन्होंने पेड़ से ही राम वृत्तांत सुनाना शुरू किया। उन्होंने राजा दशरथ का वैभव, राम जन्म, राम विवाह, राम-वनवास, सीता हरण सुग्रीव मैत्री आदि का सब वृत्तान्त संक्षेप में कह सुनाया। सीता जी भी आत्महत्या के विचार से उसी पेड़ के नीचे आ गई थीं, जिस पर हनुमान बैठे थे। उन्होंने ऊपर की ओर देखा। हनुमान को देखकर पहले तो वे घबराई पर उनकी बातों से और उनके व्यवहार से भरोसा हो चला कि वे राम के ही दूत हैं और पता लेने के लिए यहां आए हैं। अब हनुमान ने देखा कि सीता के



राम दूत में मातु जानकी, सत्य सपथ करू नानिधान की।
यह मुद्रिका मातु में आनी, दीन्ह राम तुम्ह कहं सहिदानी ॥

मन में बार-बार संदेह उठ रहे हैं, तो उन्होंने पर्वत पर फेंके हुए आभूषणों की चर्चा की और अंत में राम की दी हुई मुद्रिका दी। अब सीता को पूरा भरोसा हो गया।

हनुमान ने सीता का दुःख सुना और राम का विरह सुनाया। फिर उनको ढाढ़स बंधाते हुए कहा-
“समाचार पाते ही श्रीराम सेना लेकर आएंगे और रावण का वध करके आपको ले जाएंगे।”

सीताजी ने अपना चूड़ामणि उतार कर हनुमान को दिया और कहा, “जब तुम स्वामी को दिखाओगे तो वे समझ जाएंगे कि तुम मुझसे मिल चुके हो। वीरवर लक्ष्मण से मेरा शुभाशीर्वाद कहना। अब लौट जाओ तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो।”

लंका दहन

सीता जी से विदा लेकर हनुमान जी चल पड़े, फिर रुक कर सोचने लगे कि अब आ गए हैं तो कुछ अपना पराक्रम भी दिखाएं और शत्रु का बल भी जानें, आगे काम आएगा। वे अशोक वाटिका में पेड़ों पर टूट पड़े। उन्होंने फल खाए, वृक्ष तोड़े और चित्रघर तोड़ फोड़ डाले। पहरेदारों को उन्होंने मार भगा दिया।

राक्षसियां और पहरेदार रावण के दरबार में पहुँचे। उन्होंने कहा “नाथ, रक्षा कीजिए। एक वानर ने सब वन उजाड़ डाला है। बहुत से रक्षक मारे गए हैं। अशोक वाटिका में शोक छा गया है। बस सीता का निवास बचा है।”

रावण क्रोध से तिलमिला उठा। बंदर को पकड़ने के लिए उसने सैनिकों का एक दल भेजा। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव की जय बोलते हुए हनुमान ने सबको मार डाला। रावण को जब पता लगा, तब उसने अपने वीर पुत्र अक्षयकुमार को हनुमान से युद्ध के लिए भेजा। अक्षय कुमार महारथी था। दोनों वीर भिड़ गए। अंत में एक बड़ा-सा वृक्ष उखाड़ कर हनुमान ने राक्षस कुमार पर दे मारा। उसका रथ टूट गया। और वह सारथी समेत मारा गया। पुत्र-वध का समाचार पाकर रावण के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने अपने सबसे बड़े पुत्र मेघनाद को बुलाया। वह वीर था। उसने इंद्र को भी जीत लिया था। इसलिए उसका नाम

इन्द्रजीत भी हो गया था। रावण ने मेघनाद की प्रशंसा की और हनुमान पर विजय पाने के लिए परामर्श भी दिया। अपना बल वर्णन करके मेघनाद चल पड़ा।

हनुमान ने देखा कि एक बड़ा प्रबल योद्धा आ रहा है। वे आकाश में उड़ गए और पैंतरा बदल बदल कर राक्षस के बाणों से बचने लगे। इन्द्रजीत के अनेक अमोघ बाण भी उन्होंने व्यर्थ कर दिए। हनुमान ने भी बड़े बड़े वृक्ष उखाड़ कर मेघनाद पर फेंके। पर उस धनुर्धर ने उन्हें बीच में काटकर गिरा दिया। हनुमान किसी तरह मेघनाद के हाथ नहीं आ रहे थे। तब उसने ब्रह्मास्त्र चलाया। ब्रह्मास्त्र का मान रखने के लिए हनुमान ने उसे सहन किया और चोट खाकर वे गिर पड़े। मेघनाद की आज्ञा से राक्षसों ने उन्हें बांध लिया। बांधते समय हनुमान ने अपना शरीर बहुत बढ़ा लिया। रस्सियों से खींचते हुए राक्षस उन्हें रावण की सभा में ले चलें। रास्ते में वे उन्हें मुक्कों से ठोकते पीटते जाते थे। दरबार में पहुंच कर हनुमान ने देखा कि सोने के सिंहासन पर लंका का स्वामी रावण बैठा है, उसका तेज सूर्य के समान है। हनुमान को वह सब प्रकार से योग्य और शक्तिशाली दिखाई दिया। रावण की आज्ञा से सेनापति प्रहस्त ने हनुमान से पूछा- “तुम कौन हो ? यहां क्यों आए हो ? अशोक वाटिका को तुमने क्यों उजाड़ा और राक्षसों को मारने का दुस्साहस तुमने कैसे किया ?” रावण की ओर मुँह करके वे निडर होकर बोले- “महाराज ! मैं किष्किंधा के राजा सुग्रीव का सेवक हूँ और महात्मा राम का दूत हूँ मेरा नाम हनुमान है। राम की भार्या सीता को आप हर लाए हैं। उन्हीं की खोज में यहां आया हूँ। वन्दिनी सीता से मैं मिल चुका हूँ। आपके दर्शन करना चाहता था। इसलिए मैंने अशोक वाटिका में उत्पात किया कि शायद इस तरह आपसे भेंट हो जाए। अपनी जान बचाने के लिए आपके योद्धाओं से मुझे लड़ना पड़ा। इसमें मेरा कोई अपराध नहीं। राजा सुग्रीव ने कहलाया है कि आप सीता को सम्मान सहित लौटा दें। महाधनुर्धर राम से आप किसी प्रकार युद्ध नहीं जीत सकते। खर-दूषण का हाल आप जान ही चुके हैं। अकेले राम ने दो घड़ी भीतर ही उनका सर्व नाश कर दिया।”

हनुमान की बातें सुनकर रावण के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने आज्ञा दी कि इस दुष्ट वानर का वध किया जाए। तभी रावण के छोटे भाई विभीषण ने निवेदन किया, “महाराज ! राजनीति के अनुसार दूत का वध नहीं किया जाता। आप नीतिवान हैं। दूसरे जब यह यहां से जाकर आपके बलविक्रम की बात करेगा, बैरियों का उत्साह ठंडा पड़ जाएगा।” रावण ने विभीषण की बात मान ली और आज्ञा दी की वानर की पूँछ में तेल से तर कपड़े लपेट दिये जाएँ। फिर नगर में घुमा कर पूँछ में आग लगा दी जाए। जब पूँछ जल जाए तो इसे छोड़ दिया जाए। पूँछ रहित बंदर अपने स्वामी को ले आएगा तो उसे भी मैं देख लूंगा।

रावण की आज्ञा पाकर राक्षस तेल से तर कर-करके कपड़े हनुमान की पूँछ पर लपेटने लगे हनुमान की लंबी पूँछ में ढेरों कपड़े लिपट गए तब लंकावासी उनको नगर में घुमाने निकले। नर-नारियाँ और बच्चों की बहुत भीड़ ताली पीटती हुई पीछे हो ली। कोई कोई उनके ऊपर ईंट, पत्थर भी फेंक देता था। हनुमान को भी लंका देखने का अच्छा अवसर मिल गया। वे मन ही मन प्रसन्न थे। नगर में घुमाकर राक्षसों ने उनकी पूँछ में आग लगा दी।

आग लगी देखकर हनुमान ने अपना शरीर छोटा किया और बंधन से निकल कर छलांग लगाई। वे नगर के फाटक पर चढ़ गए और उस पर आग लगा दी एक अटारी दूसरी अटारी पर फुदकते और आग लगा देते। सारी लंका जलने लगी। लंका का सोना बहकर समुद्र में जा पहुंचा। नगर में हाहाकार मच गया। पानी पानी चिल्लाकर स्त्री बच्चे इधर-उधर भागने लगे। सबको अपनी जान बचाने की पड़ी। आग की



देह विसाल परम हरुआई, मन्दिर ने मन्दिर चढ़ धाई।
जरह नगर भा लोग विहाला, झपट लपट बहु कोटि कराला ॥

लपटें आकाश चूम रही थीं और हनुमान भी अग्नि रूप हो रहे थे। सोने की लंका जलकर राख हो गई। हनुमान ने समुद्र में कूदकर अपनी पूँछ बुझाई।

अब हनुमान को सीता जी की चिन्ता हुई। उनको भय हुआ कि कहीं वे जल न गई हों। तब तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा। वे इसी चिन्ता में डूब-उतर रहे थे कि उनकी आँख अपनी पूँछ पर पड़ी, उनके बाल तक नहीं जले थे। उनको धीरज बंधा— जब मेरी पूँछ ही नहीं जली तो पतिव्रता धर्म से रक्षित सीताजी कैसे जल सकती हैं! तभी उनको देववाणी भी सुनाई दी— “लंका जल गई पर जानकी पर आंच भी नहीं पहुँची।” अपनी आँखों से देखता चलूँ। यह सोचकर वे फिर जानकी के पास पहुँचे और उन्हें प्रणाम किया। सीताजी ने प्रसन्न होकर अनेक आशीर्वाद दिए। वैदेही को अनेक तरह से ढाढस बंधा कर और श्रीराम के बल-पराक्रम का भरोसा देकर हनुमान जी से लौट चले।

हनुमान का लंका से लौटना

सीता को प्रणाम करके हनुमान अरिष्ट पर्वत पर चढ़ गए। उन्होंने घोर सिंहनाद किया और समुद्र के उत्तरी तट की ओर उड़ चले।

अंगद, जामवंत, नल, नील आदि उनके साथी बड़ी चिन्ता से हनुमान की बाट जोह रहे थे। हनुमान की गर्जना सुनकर वे चौंक पड़े। उन्हें लगा कि मानो दक्षिण का आकाश ही फट गया। हनुमान हवा को चीरते हुए चले आ रहे थे। वानरों ने देखा कि महाध्वनि समीप आती जा रही है। वे ऊँचे-2 वृक्षों और पर्वत शिखरों पर चढ़ गए। तभी उन्होंने देखा कि दक्षिण दिशा से तीव्र प्रकाश बढ़ता चला आ रहा है। कौतूहल से वे उसे देखने लगे। थोड़ी देर में साफ हो गया कि दिशाओं को प्रकाशित करते हुए श्रीराम तथा सुग्रीव की जय जय कार करते हुए वीर हनुमान लौट रहे हैं। बंदर तालियां पीट-पीट कर नाचने लगे। वे बार बार अपनी पूँछ को चूमते थे। कभी पेड़ पर चढ़ जाते फिर उतर आते। हनुमान के आते ही सबने उन्हें घेर लिया। अंगद और जामवंत ने उन्हें हृदय से लगा लिया। कुछ बंदरों ने पेड़ों से फल तोड़कर उन पर

बरसाए। फिर एक जगह बैठकर हनुमान ने लंका के सब समाचार सुनाए। अंगद ने कहा, “चलो अब शीघ्रता करो। हाल रास्ते में सुनते चलेंगे। सुग्रीव को शीघ्र समाचार देना है।” वे किष्किंधा की ओर चल पड़े। मार्ग में हनुमान ने बताया कि रावण ऐसा वैसा बली नहीं है उसको पराजित करने के लिए बुद्धि और बल दोनों की आवश्यकता है। हम लोगों को प्राणों की बाजी लगानी होगी। चलते चलते वे सुग्रीव के मधुवन नामक बाग में पहुँचे। सुग्रीव का मामा दधिमुख उसकी रखवाली करता था यह बाग सुग्रीव को बहुत प्यारा था। साथियों को भूखा और थका देखकर अंगद ने आज्ञा दी कि भरपेट फल खाओ और मधु पियो। बंदरों ने मनमाने फल खाए और भालुओं ने मधु पिया। रखवालों को उन्होंने मारपीट कर भगा दिया। दधिमुख रोता चिल्लाता हुआ आया उसने अंगद की शिकायत करते हुए कहा कि दक्षिण से आए हुए सब वानरों ने मधुवन उजाड़ दिया। सुग्रीव समझ गए कि वे राम का काम कर सीता जी का समाचार जरूर ले आए हैं, नहीं तो मधुवन उजाड़ने की तो बात ही क्या, इधर आने की भी हिम्मत न करते। उन्होंने दधिमुख से कहा, “वानरों को शीघ्र मेरे पास प्रसन्नवन पर्वत पर भेजो।” दधिमुख द्वारा सुग्रीव की आज्ञा पाते ही वानर चल पड़े।

प्रसन्नवन पर्वत पर पहुँचकर सब वानरों ने सुग्रीव को प्रणाम किया। अंगद और जामवंत ने सीताजी के मिलने की सब कहानी सुग्रीव को सुनाई। सुग्रीव ने हनुमान को हृदय से लगाया। वानरों को साथ लेकर सुग्रीव राम के पास गए और कहा कि हनुमान ने हम सब कि लाज रख ली। राम ने खड़े होकर हनुमान को हृदय से लगाया और लंका के समाचार पूछे। हनुमान ने दुःखी सीता की विपदा का सारा हाल कहा और सीता का संदेश भी कहा- “यदि दो महीने के भीतर आर्य यहाँ नहीं आ जाते तो दुष्ट रावण मुझे मार डालेगा। वीरवर लक्ष्मण को भी उन्होंने शुभाशीर्वाद भेजे हैं।” सीता जी का दिया हुआ चूड़ामणि भी हनुमान ने राम को दिया चूड़ामणि देखकर राम रो पड़े और सुग्रीव से बोले यह चूड़ामणि जानकी को विवाह के अवसर पर अपने पिता से मिला था। वे इसे कभी अलग नहीं करती थी। सीता के बारे में श्रीराम तरह-तरह के सवाल करने लगे। वह कैसी है ? राक्षसियों में कैसी रहती है ? उन्होंने तुम्हें कैसे पहचाना ? उन्होंने क्या कहलाया है ? हनुमान ने इन प्रश्नों का यथोचित उत्तर दिया और शोक छोड़कर युद्ध के लिए श्रीराम को उत्साहित किया। वे बोले “नाथ! अब शोक न करें। शोक से बल क्षीण होता है। युद्ध की तैयारी करें और सीता जी को विपत्ति से छुड़ाएँ।” श्रीराम ने सुग्रीव से कहा, “मित्र! अब देर न करो। अपनी सेना को रण यात्रा की आज्ञा दो।”

प्रश्न

1. समुद्र पारकर हनुमान लंका में किस प्रकार पहुँचे ? मार्ग में उनको क्या-क्या कठिनाइयाँ हुई ?
2. लंका-यात्रा में हनुमान ने अपने बल और बुद्धि दोनों का परिचय दिया है। दोनों के उदाहरण दो।
3. सीता और हनुमान की भेंट का संक्षिप्त में वर्णन करो।
4. लंका-दहन का संक्षेप में वर्णन करो।